Dr.Uttam Kumar
SRAP College,Barachakia
Mob no-8210561032

Faculty -Commerce
Subject -Business Organisation
Class -2nd Semester
Session-2023-27

उद्योगों के स्थानीयकरण का अर्थ
(MEANING OF INDUSTRIAL LOCALISATION)

जब किसी उद्योग की विभिन्न प्रकार की इकाइयाँ किसी क्षेत्र विशेष या स्थान विशेष में केन्द्रित हो जाती हैं, तो यह उस उद्योग का स्थानीयकरण कहलाता है। **प्रो. राबर्टसन** के अनुसार, **"विशिष्ट क्षेत्रों के कुछ विशिष्ट उद्योगों के आकर्षित होने, विकसित होने तथा केन्द्रित होने की प्रवृत्ति को उद्योगों के स्थानीयकरण के नाम से सम्बोधित किया जाता है।" प्रो. पी. एस. लोकनाथन के शब्दों में, "स्थानीयकरण से आशय विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग उद्योगों के केन्द्रीकरण से है, जिसे अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से क्षेत्रीय श्रम-विभाजन भी कहा जा सकता है।"** इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि स्थानीयकरण उस क्षेत्र में होना चाहिए जहाँ उत्पादन एवं वितरण की प्रति इकाई लागत न्यूनतम हो, जहाँ उस वस्तु की अधिक-से-अधिक माँग हो जिससे कि अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके। इसी सन्दर्भ में **डॉ. टी. आर. शर्मा** का कथन है, "अवैज्ञानिक स्थानीयकरण राष्ट्र में उपलब्ध संसाधनों के दुरुपयोग को प्रोत्साहित करता है। ऐसी हालत में उद्योगपति को कम लाभ प्राप्त होते हैं, पूँजी विनियोक्ता को कम प्रतिफल मिलता है तथा उपभोक्ताओं को अधिक कीमत देनी होती है। आधुनिक औद्योगिक समुदाय जो दोषपूर्ण स्थानीयकरण के कारण पर्याप्त कष्ट झेल चुके हैं, अब अपने उद्योगों के क्षेत्रीय नियोजन की आवश्यकता अनुभव करते हैं जिसका उद्देश्य उत्पादन एवं वितरण में अधिकतम कुशलता प्राप्त करने के साथ-साथ व्यापाक आर्थिक, सामाजिक और सुरक्षात्मक आधार पर औद्योगिक क्रिया-कलापों का अनुकूलतम वितरण भी करना होता है।"

परिभाषाएँ (Definitions)

विभिन्न विद्वानों ने स्थानीयकरण की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं जिनमें से प्रमुख विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं—

प्रो. शुबिन के अनुसार, "आदर्श स्थानीयकरण वही है जो वस्तु या सेवा के उत्पादन एवं वितरण की न्यूनतम प्रति इकाई लागत को सम्भव बनाता है।"

किम्बाल एवं **किम्बाल** के अनुसार, "व्यवसाय की स्थापना की दृष्टि से सर्वाधिक लाभप्रद स्थानीयकरण वही है जहाँ से कच्चा माल जुटाने और उससे तैयार माल बनाने तथा तैयार माल को वितरित करने की लागत न्यूनतम होगी।"

स्प्रीगल एवं लैन्सबर्ग के अनुसार, "संयन्त्र स्थानीयकरण प्राय: विरोधी सामाजिक, आर्थिक, सरकारी एवं भौगोलिक कारणों के बीच तालमेल का परिणाम है।"

डॉ. पी. एस. लोकनाथ के अनुसार, "स्थानीयकरण से अभिप्राय विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न उद्योगों के केन्द्रीयकरण से है जो अन्तर्राष्ट्रीय पहलू से क्षेत्रीय श्रम-विभाजन कहलाता है।"

व्यावसायिक इकाई के स्थानीयकरण का महत्व
(IMPORTANCE OF LOCALISATION OF BUSINESS UNIT)

यदि किसी देश में उद्योगों का स्थानीयकरण वैज्ञानिक एवं विवेकपूर्ण रीति से नहीं किया जाता है, तो वह देश उपलब्ध साधनों का अनुकूलतम विदोहन नहीं कर पाता है। उद्योगों का दोषपूर्ण स्थानीयकरण उत्पादन लागतों को बढ़ा देता है तथा उत्पादन दक्षताओं में कमी लाता है। ऐसे उद्योगों की प्रतियोगितात्मक क्षमता घट जाती है, क्योंकि वे न्यूनतम मूल्य पर श्रेष्ठतम वस्तुओं का उत्पादन करने में अपने को असमर्थ पाते हैं। अविवेकपूर्ण स्थानीयकरण अनेक बाधाओं एवं समस्याओं को जन्म देता है जिससे उस देश के औद्योगिक विकास को आघात पहुँचता है। ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि जिन उद्योगों का स्थानीयकरण जल्दबाजी में अवैज्ञानिक ढंग से किया गया, वे कुछ समय बाद या तो बन्द हो गये अथवा राजकीय संरक्षण या अनुदान की माँग करने लगे। अत: यह अत्यन्त आवश्यक है कि उद्योगों का स्थानीयकरण वैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर ऐसे स्थानों या क्षेत्रों में किया जाना चाहिए जहाँ उत्पादन के समस्त अथवा अधिकांश घटक सुविधापूर्वक उपलब्ध हों तथा उत्पादन की